छुटकारे का इतिहास

उपसंहारः पुनः–सृष्टि

डॉ. डेविड प्लैट

यदि आपके पास बाइबल है, और मेरी आशा है कि आपके पास है, तो मेरे साथ प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 निकालिए। इस वचन के बिना मैं एक पासबान के रूप में बेकार हूँ और इस वचन के बिना, एक कलीसिया के रूप में हम बेकार हैं।

परन्तु आज मैं चाहता हूँ कि हम पीछे मुड़कर देखें कि हम कहाँ से आए हैं। प्रकाशितवाक्य में इससे पहले आई बातों को याद करें और फिर मैं चाहता हूँ हम इस बात को देखें कि परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोगों के रूप में परमेश्वर के छुटकारे की योजना में अब भी प्रकट हो रही किन बातों की ओर बढ़ रहे हैं। अतः, मैं चाहता हूँ कि हम इस प्रश्न के बारे में सोचने के साथ शुरू करें, हमारे पास बाइबल क्यों है? हम इसे पढ़ते आ रहे हैं, यह इतनी महत्वपूर्ण क्यों है? यह इतनी मूल्यवान क्यों है?

कुछ लोग कहेंगे कि यह एक धार्मिक मार्गदर्शन की पुस्तक है। मसीहियत संसार का एक धर्म है और बाइबल मसीहियत की एक प्रमुख पुस्तक है। अतः, यह बताती है कि मसीहियों को क्या करना चाहिए, मसीहियों को कैसे व्यवहार करना चाहिए, मसीहियों को क्या विश्वास करना चाहिए। यह एक धार्मिक पुस्तक है और इसलिए ऐसी ही बहुत सी धार्मिक पुस्तकों में से एक है। कुछ लोग कहेंगे कि यह हमें ऐतिहासिक जानकारी के लिए दी गई है। इस पुस्तक में हजारों वर्ष पूर्व का इतिहास है और यह पुस्तक सदियों पुरानी सभ्यता को समझने में हमारी सहायता करती है।

दूसरे लोग कहेंगे कि यह नैतिक शिक्षाओं की एक पुस्तक है। हमारे पास बाइबल है; हम एक अच्छी जीवन व्यतीत करना सीख सकते हैं। हम अब्राहम या मूसा या एलिय्याह या पौलुस के समान बनना चाहते हैं। हम फिरौन या शाऊल या ईजेबेल या यहूदा के समान नहीं बनना चाहते हैं। अतः, पवित्रशास्त्र के पृष्ठों पर हम हर प्रकार के नैतिक लोगों और नैतिक शिक्षाओं को पाते हैं। अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो, एक–दूसरे के प्रति दयालु बनो। अतः, बाइबल नैतिक शिक्षाओं की एक श्रंखला है।

कुछ लोग बाइबल को जीवनियों के अध्ययन की श्रंखला के रूप में देखते हैं। आप बाइबल में हर प्रकार के लोगों को ले सकते हैं और उन्हें हमारे जीवनों के उदाहरणों के रूप में देख सकते हैं। बहुत से लोग दाऊद और गोलियत के साथ उसके युद्ध का अध्ययन करते हैं और वहाँ हम साहस के बारे में सीखते हैं। हम नहेम्याह और उसके द्वारा शहरपनाह के निर्माण के बारे अध्ययन करते हैं और वहाँ पर हम नेतृत्व के बारे में सीखते हैं। हम विश्वास और भरोसे के बारे में सीखने के लिए पतरस और चेलों का अध्ययन करते हैं और बाइबल हमारे लिए कहानियों का एक संग्रह बन जाती है जिसमें मसीही इतिहास के कुछ अच्छे लोग हैं और कुछ इतने अच्छे नहीं हैं; और वे सब मिलकर आज मसीहियत में आगे बढ़ने में हमारी सहायता करते हैं।

अतः, बाइबल के बारे में लोगों के मन में विविध प्रकार के विचार हैं और मेरे विचार से हमारे मनों में भी इसके बारे में विभिन्न प्रकार के विचार हैं कि हमारे पास बाइबल क्यों है। परन्तु यदि हम सावधान नहीं हैं तो हम इस पुस्तक के पूरे बिन्दू से चूक जाएँगे। हम इसकी खूबसूरती और इसके आश्चर्य और हमारे जीवनों के लिए इसके अनन्त महत्व से चूक जाएँगे। और इसलिए मैं आपके सामने एक कथन रखना चाहता हूँ जो मेरे विचार से इस पुस्तक का सार है। बाइबल का उद्देश्य यह प्रकट करना है कि परमेश्वर कौन है और परमेश्वर अपने राज्य के लिए अपने लोगों को कैसे छुटकारा देता है। बाइबल का उद्देश्य यह प्रकट करना है कि परमेश्वर कौन है और परमेश्वर अपने राज्य के लिए अपने लोगों को कैसे छुटकारा देता है।

अब दो बातें जो विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। पहली, बाइबल का मुख्य पात्र परमेश्वर है। कई बार बाइबल को हमारे जीवन में आने वाली प्रत्येक परिस्थिति के लिए एक हस्त–पुस्तिका के रूप में माना जाता है। इसलिए, अक्सर लोग बाइबल की ओर आते हैं और उनका प्रश्न होता है, यह मेरे जीवन में कैसे लागू होती है? इस अध्याय या इस पुस्तक या इस वचन की मेरे जीवन के लिए क्या प्रासंगिकता है? परन्तु, यथार्थ यह है कि बाइबल हमसे कहीं बढ़कर परमेश्वर के बारे में है।

यह पुस्तक परमेश्वर का प्रकाशन है। यह उसकी महिमा, उसके चरित्र, उसके स्वभाव, उसके मार्गों और उसके कार्यों को प्रकट करती है। और यदि हम यह सोचकर बाइबल की ओर आते हैं कि यह वचन या परिच्छेद या पुस्तक मुझे यह सिखाती है कि मुझे जीवन की इस या उस परिस्थिति में क्या करना चाहिए, तो हम बाइबल के इच्छित उद्देश्य के परे जाने के खतरे में पड़ सकते हैं; जो

हमें परमेश्वर के बारे में सिखाना है। ताकि हम जान सकें कि वह कौन है। अब, इसका मतलब यह नहीं है कि बाइबल का हमारे जीवनों के लिए कोई व्यवहारिक प्रयोग नहीं है। इसके हमारे जीवनों के लिए विशाल प्रयोग हैं, अनन्त प्रयोग हैं; परन्तु, मुख्य बात यह है कि बाइबल परमेश्वर को दिखाने के द्वारा हमें यह सिखाती है कि हम कौन हैं।

अब मैं भी एक पल के लिए यहाँ रूकना चाहता हूँ क्योंकि यह अत्यधिक विशाल है। हमारे समय में एक स्पष्ट रीति है। हाँ, हमारी संस्कृति में परन्तु परमेश्वर के वचन की प्रतिज्ञा से दूर कलीसिया में भी। बहुत सी कलीसियाएँ, बहुत सी कलीसियाओं के अगुवे परमेश्वर के वचन को प्रतीकात्मक मान्यता देते हैं। बहुत सी कलीसियाएँ और आराधना सभाएँ हर प्रकार की ऐसी बातों से भरी हैं, जो परमेश्वर का वचन नहीं है। वे ऐसी बातों से भरी हैं जिन्हें लोग हमारे प्रतिदिन के जीवन में अधिक प्रयोग करने योग्य मानते हैं। अतः, आप कलीसिया में बहुत कुछ देखते हैं जैसे, धन के प्रबन्ध या बच्चों के पालन–पोषण के बारे में जानकारी। नेतृत्व के सिद्धान्त हों या अवसाद से निपटने के तरीके या हमारे दैनिक जीवनों, विवाह, अभिभावकपन, धन, दुःख का प्रबन्ध, तलाक से उबरने, इत्यादि से संबंधित व्यवहारिक विचार हों; वे सारी बातें जिनसे हम अपने जीवन में जूझते हैं। परन्तु, खतरा यह है कि बाइबल हमें इक्कीसवीं सदी में हमारे सामने आने वाली हर एक परिस्थिति को संबोधित करने वाली हस्त–पुस्तिका के रूप में नहीं दी गई थी। बाइबल हमें यह दिखाने के लिए दी गई थी कि परमेश्वर कौन है, एक ऐसा परमेश्वर जो केवल इक्कीसवीं सदी से कहीं अधिक महान है और जो केवल हम पर ही नहीं परन्तु सब लोगों पर राज्य करता है।

और यहीं पर बाइबल अपने अन्दर की खूबसूरती को प्रकट करती है क्योंकि हमारे सारे संघर्षों और हमारी सारी परेशानियों के बीच में हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता अवसाद मुक्त जीवन बिताना, अच्छे माता–पिता बनना या अच्छी नौकरियाँ करना नहीं है। यदि हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता यही है तो डॉ. फिल के पास जाकर उनसे कुछ जानकारी लीजिए। नहीं, हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता परमेश्वर को जानना है। हमारी सबसे गहरी जरूरत परमेश्वर को जानना और परमेश्वर के साथ चलना है। इसलिए, जब हम इस पुस्तक पर आते हैं तो कुछ लोग कहेंगे कि मेरे जीवन में ऐसा हो रहा है या वैसा हो रहा है।

हम इस्राएलियों और मोआबियों के बारे में अध्ययन क्यों कर रहे हैं? उसका कारण यह है। क्योंकि इस्राएलियों और मोआबियों की यह कहानी परमेश्वर की महानता को समझने में मेरी सहायता

करेगी। यह उसकी महानता के सन्दर्भ में मेरे जीवन को देखने में मेरी सहायता करेगी। यह उसके स्वरूप के अनुरूप बनने में मेरी सहायता करेगी और उसके आत्मा के द्वारा उसके साथ चलने में मेरी सहायता करेगी ताकि परमेश्वर का आत्मा आपके वैवाहिक जीवन के हर एक संघर्ष में आपके साथ चले। परमेश्वर का आत्मा अभिभावकपन के हर एक संघर्ष में आपके साथ चलेगा। परमेश्वर का आत्मा हर एक आपकी हर एक आर्थिक समस्या, नौकरी से संबंधित चुनौती में आपके साथ चलेगा और परमेश्वर द्वारा अपने वचन में दिए गए प्रकाशन के आधार पर वह आपको आवश्यक बुद्धि देगा।

यह सब इस बात को दिखाने के लिए है कि बाइबल का मुख्य पात्र परमेश्वर है। बाइबल का उद्देश्य परमेश्वर को देखने में हमारी सहायता करना है, उसके अस्तित्व के प्रकाश में यह देखने में सहायता करना कि हम कौन हैं। परमेश्वर कौन है और वह अपने लोगों को छुटकारा कैसे देता है। अब, उस शब्द का क्या अर्थ है? हमने इस वर्ष की परमेश्वर के वचन की हमारी यात्रा को *छुटकारे का इतिहास* क्यों कहा है?

परमेश्वर के लिए अपने लोगों को छुटकारा देने का अर्थ है सृष्टि को पुनः अपनी ओर लाना। यह पुस्तक परमेश्वर द्वारा सारी सृष्टि को पुनः अपनी ओर लाने की कहानी है। हम थोड़ी देर में देखेंगे कि सृष्टि में सब कुछ पुनः उसकी ओर आ जाता है। परमेश्वर सृष्टि को पुनः अपनी ओर ला रहा है और परमेश्वर लोगों की अपने स्वरूप में पुनर्सृष्टि कर रहा है। मैं थोड़ी ही देर में आपको बताऊँगा कि इससे मेरा क्या मतलब है। लेकिन जब आप छुटकारे के बारे में सुनते हैं तो परमेश्वर के स्वरूप में पुनर्सृष्टि के बारे में सोचें।

अतः, बाइबल हमें दिखा रही है कि परमेश्वर कौन है और वह अपने राज्य के लिए अपने लोगों को कैसे छुटकारा देता है। अब मैं चाहता हूँ कि परमेश्वर के राज्य की यह तस्वीर आज आपके मन में बैठ जाए। मैं चाहता हूँ कि हम परमेश्वर के राज्य के बारे में सोचें जिसका राजा स्पष्टतः परमेश्वर है। जब आप एक राज्य के बारे में सोचते हैं तो किसी भी राज्य के कुछ अनिवार्य अवयव होते हैं। सबसे पहले, उसमें एक राज्य होता है, वे लोग जिन पर राजा राज्य करता है। वे नागरिक, निवासी और राज्य के सदस्य हैं जो राजा के अधीनस्थ होते हैं।

अतः, राज्य में लोग होते हैं जिन पर राजा राज्य करता है। एक स्थान होता है जहाँ पर राजा राज्य करता है। राजा राज्य कहाँ करता है, राजा शासन कहाँ करता है? राज्य में। अतः, राज्य में वे लोग शामिल हैं जिन पर राजा राज्य करता है और एक स्थान जहाँ राजा अपने लोगों पर राज्य करता है और राजा तथा उसके राज्य का एक उद्देश्य होता है। यह राजा क्या है और यह राज्य क्या कर रहा है? अतः, किसी भी राज्य में ये तीन अवयव होते हैं?

अब मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि आप इन तीनों अवयवों के अनुरूप परमेश्वर के राज्य के बारे में सोचें, परमेश्वर अपने राज्य के लिए अपने लोगों को कैसे छुड़ा रहा है। परमेश्वर अपने लोगों को, अपने अधीनस्थों को, राज्य के नागरिकों को, अपने बच्चों को अपने उद्देश्य के लिए, विशेषतः अपने राज्य की महिमा, बढ़ोतरी, विस्तार और घोषणा के लिए अपने राज्य के अधीन उस स्थान पर ला रहा है जहाँ वह शासन करता है। अतः, बाइबल के उद्देश्य के प्रकाश में, मैं चाहता हूँ आप देखें कि यह सब कैसे होता है।

प्रकाशितवाक्य 21 में जाने से पहले मैं चाहता हूँ कि हम पवित्रशास्त्र की कहानी के मानचित्र को खोजें। मैं चाहता हूँ आप यहाँ सृष्टि की एक कहानी से लेकर नई सृष्टि तक बाइबल की प्रगति को देखें और मैं चाहता हूँ आप देखें कि इस पिछले वर्ष में हमने जो कुछ पढ़ा था, वह उस राजा के सन्दर्भ से संबंधित है जो अपने लोगों को अपने उद्देश्य के लिए अपने स्थान पर ला रहा है। क्योंकि यदि बाइबल वास्तव में परमेश्वर के राज्य और छुटकारे की उसकी योजना के प्रकटीकरण की कहानी है, तो हम इस कहानी को जानना चाहते हैं। हम कभी भी बाइबल को यहाँ–वहाँ ऐसे हिस्सों के रूप में नहीं पढ़ेंगे, जिनका आपस में कोई संबंध नहीं है। मेरी आशा है कि पिछले वर्ष बाइबल को क्रमानुसार पढ़ने का एक लाभ यही रहा है और यह देखना भी कि यह सब इस एक कहानी में कैसे प्रकट होता है। हम उसे देखना चाहते हैं।

हम बाइबल को केवल अलग–अलग हिस्सों के रूप में नहीं पढ़ना चाहते हैं। हम यह समझना चाहते हैं कि यह सब आपस में किस प्रकार संबंधित है। हम कहानी को जानना चाहते हैं। दूसरा, हम इस कहानी को अनुभव करना चाहते हैं। हम बाइबल की इस कहानी को अनुभव करना चाहते हैं क्योंकि जब हम इस कहानी को प्रकट होते हुए देखते हैं तो हमें यह अहसास होता है कि हम इस कहानी के हिस्से हैं और हमारी कहानी की शुरूआत हमसे नहीं हुई है। इसकी शुरूआत उस

परमेश्वर से हुई जिसने जगत की स्थापना से पूर्व अपने लोगों को प्रेम और करूणा दिखाने का निर्णय लिया।

और मैं चाहता हूँ हम इस बात को देखें कि हमने जो कुछ पढ़ा है वह सब हमें इस अहसास की ओर लाता है कि इस कहानी में सबसे पहले आने वाले हम नहीं थे; बहुत सी पीढ़ियों के लोग हैं जो हमसे पहले जा चुके हैं। और यदि प्रभु यीशु का आगमन आज नहीं होता है, तो हम शायद इस परिदृश्य के अन्तिम व्यक्ति भी नहीं होंगे। और जिस विश्वासयोग्यता से परमेश्वर चाहता है कि हम इस कहानी को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाएँ, वह हमें तीसरी बात की ओर लाता है।

हम इस कहानी को जानना चाहते हैं, हम इस कहानी को अनुभव करना चाहते हैं और हम इस कहानी को बताना चाहते हैं। हमें लोगों को बताना है, उन्हें दूसरों को यह बताने के लिए तैयार करना है कि परमेश्वर कौन है और किस प्रकार वह अपने प्रेम और अपनी करूणा में क्रूस पर मसीह के कार्य के द्वारा लोगों को छुड़ाकर अपने पास ला रहा है। इसलिए, जानने, अनुभव करने और बताने के लिए इससे बेहतर और कोई कहानी नहीं है। मैं कुछ पलों में उसे दोहराना चाहता हूँ जिसे हम पहले देख चुके हैं।

मैं विभिन्न समयों पर विभिन्न वचन बताऊँगा जिनकी ओर जाने का समय हमारे पास नहीं होगा परन्तु वह सब हमारी तरफ ले जाएगा जहाँ हम नई सृष्टि की तस्वीर को पाते हैं। यह छुटकारे का इतिहास है। हमने उत्पत्ति 1 और 2 में सृष्टि के साथ शुरूआत की है। सृष्टि और परमेश्वर के राज्य के इन तीनों आयामों की बहुतायत को देखें।

पहला, इसमें लोग हैं। परमेश्वर की आशीष उसके लोगों पर है। उत्पत्ति 1 और 2 में हमने देखा कि परमेश्वर अपनी सृष्टि के शिखर के रूप में पुरूष और स्त्री की रचना करता है। वह उनका राजा है। वे उसके प्रिय पुरूष और स्त्री हैं जिन्हें परमेश्वर को जानने, परमेश्वर का आनन्द लेने और परमेश्वर के साथ चलने के लिए रचा गया है। वे अदन की वाटिका में संगति के सिद्ध स्थान पर परमेश्वर के साथ निर्बाध संगति करते थे, एक ऐसे स्थान पर जहाँ प्रत्येक रिश्ता सिद्ध था।

मनुष्य का परमेश्वर के साथ रिश्ता सिद्ध था, पुरूष और स्त्री का रिश्ता सिद्ध था। पुरूष का अपने वातावरण के साथ सिद्ध संबंध था। यह अपने लोगों पर परमेश्वर की आशीष है। यह सिद्ध संगति

के स्थान में अपने लोगों पर परमेश्वर की आशीष है और उसका एक ही उद्देश्य है कि परमेश्वर की महिमा सब लोगों में फैल जाए।

यदि आपको याद हो, उत्पत्ति 1:27 कहता है कि परमेश्वर ने हमें अपने स्वरूप में रचा है, हम में उसका स्वरूप है और फिर, 1:28 में परमेश्वर कहता है, "फूलो–फलो और पृथ्वी में भर जाओ और उसे अपने वश में कर लो।" दूसरे शब्दों में, मेरे स्वरूप को लो और मेरी महिमा के लिए उसे पृथ्वी भर में फैला दो। यहाँ यही तस्वीर है। परमेश्वर के लोगों पर उसकी आशीष, सिद्ध संगति जहाँ परमेश्वर की महिमा सारे लोगों में फैलती है। उत्पत्ति 1 और 2 में हमने इसी आरम्भिक तस्वीर को देखा था।

और फिर उत्पत्ति 3 में पाप का प्रवेश होता है और पाप के आते ही सब कुछ बदल गया। केवल अपने लोगों पर परमेश्वर की आशीष और राज्य के अधीनस्थों पर राजा की आशीष की बजाय, हम पहली बार परमेश्वर की आशीष और न्याय को आदम और हव्वा के द्वारा देखते हैं। उत्पत्ति तीसरे अध्याय में पाप करते ही हम अपने लोगों पर परमेश्वर के न्याय को देखते हैं। क्योंकि पाप के कारण मनुष्य परमेश्वर के न्याय के योग्य है। परन्तु इस बात से न चूकें कि आशीष अब भी है।

उत्पत्ति 2 में परमेश्वर ने कहा था, "यदि तुम मेरी आज्ञा न मानकर इस फल को खाओगे तो निश्चय मर जाओगे।" और फिर भी, उत्पत्ति अध्याय 3 के अन्त में भी आदम और हव्वा की साँसें चल रही थी। यद्यपि वे उसी पल मृत्यु के योग्य थे लेकिन उत्पत्ति 3 में जाएँ और आप देखेंगे कि परमेश्वर ने एक पशु को लेकर उनके बदले में बलि किया और उसकी खाल से उनके पाप की लज्जा को ढाँपा। एक ऐसे स्थान पर आदम और हव्वा के द्वारा अपने लोगों पर परमेश्वर की आशीष, जो अब एक सिद्ध नहीं परन्तु बाधित संगति का स्थान है। उत्पत्ति 1 और 2 में जो रिश्ते सिद्ध थे, वे सारे रिश्ते अब उत्पत्ति 3 में अधूरे हो गए हैं।

परमेश्वर के साथ पुरूष का रिश्ता अब ग्लानि, लज्जा और भय से भर गया है। स्त्री के साथ पुरूष का संबंध बाधित हो गया है। पर्यावरण के साथ पुरूष का संबंध बाधित हो गया है। पुरूष और स्त्री को अदन की वाटिका में परमेश्वर की उपस्थिति में से निकाल दिया गया और जीवन के वृक्ष की सुरक्षा के लिए चारों ओर घूमने वाली ज्वालामय तलवार को नियुक्त कर दिया गया। और निःसन्देह, एक दिन वे मरेंगे; केवल वे ही नहीं परन्तु उनके बाद आने वाले हर एक पुरूष और स्त्री

उनके और हमारे जीवन के पाप के फलस्वरूप मरेंगे। इसके परिणामस्वरूप, अब सब लोगों में परमेश्वर की महिमा दूषित हो गई है।

सम्पूर्ण इतिहास में प्रत्येक पुरूष और स्त्री आदम से मिले पापमय स्वभाव के साथ जन्म लेता है। हम में से प्रत्येक व्यक्ति ऐसे दिल के साथ जन्म लेता है जो परमेश्वर से घृणा करता है, परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करता है और इसी के चरम को हम उत्पत्ति 8 और 9 में जल प्रलय तथा उत्पत्ति 11 में बाबेल के गुम्मट की तस्वीरों में देखते हैं। अब, यह सब उत्पत्ति 12 से 50 तक पुरखों की ओर लाता है जहाँ हम अब्राहम, इसहाक और याकूब के द्वारा परमेश्वर की आशीष और न्याय को देखते हैं।

उत्पत्ति 12:1 और 3 में राजा, परमेश्वर लोगों को अपनी ओर बुलाता है। वह कहता है, "अब्राहम मैं तुझे आशीष दूँगा। मैं तेरे सारे वंशजों को आशीष दूँगा और तेरे द्वारा मेरी आशीष को सब लोगों पर प्रकट करूँगा।" अब्राहम और उसके वंशज परमेश्वर की आशीष के भागी होंगे क्योंकि अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया था। और यही मुख्य बात थी। आप उत्पत्ति 12, 15, 18 और 22 में जाकर अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा को देखें और आप देखेंगे कि अब्राहम के साथ की यह वाचा परमेश्वर द्वारा अब्राहम को दिए गए वायदों और उन वायदों में अब्राहम के विश्वास और भरोसे पर टिकी है। और जब यह होता है तो आप संगति के वायदे की एक तस्वीर देखते हैं।

उत्पत्ति 12 में परमेश्वर कहता है, "अपने देश को छोड़कर उस स्थान में जा जिसे मैं तुझे दिखाऊँगा।" अब्राहम ऐसा ही करता है, वह परमेश्वर द्वारा दिखाए गए स्थान पर जाता है और परमेश्वर कहता है, "मैं यह सारी भूमि तुझे और तेरे वंशजों को दूँगा। परमेश्वर अब्राहम के पुत्र इसहाक और इसहाक के पुत्र याकूब के साथ भी यही वायदा करता है। और यह देश वायदे का देश बन जाता है और परमेश्वर वायदा करता है कि वह अपने लोगों को वहाँ स्थापित करेगा और वह इस देश में अपने लोगों के साथ वास करेगा और उनके प्रति अपनी विश्वासयोग्यता के द्वारा अपनी महिमा को सब लोगों पर प्रकट करेगा। पुरखों में सब कुछ उस स्थान पर परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के प्रति विश्वासयोग्यता के वायदे पर टिका है।

उत्पत्ति की पुस्तक के अन्त में आने पर परमेश्वर की प्रजा, आज का इस्राएल, मिस्र में जाती है क्योंकि वहाँ देश में अकाल पड़ा था। और आप देखते हैं कि परमेश्वर की प्रजा, इस्राएली लोग

विदेश में भी परमेश्वर के वायदों को थामे रखते हैं जो कहानी के अगले भाग, विजय में निर्गमन की ओर लाता है। फिर निर्गमन की पुस्तक से लेकर 1 शमूएल अध्याय 8 तक परमेश्वर अपने लोगों के बीच में मूसा, यहोशू, शमूएल और न्यायियों के समान नए अगुवों को खड़ा करता है और उनके द्वारा पुनः आशीष और न्याय को प्रकट करता है। इससे न चूकें, आशीष और न्याय। ये दोनों हैं।

इसके बारे में सोचें – आप इसे लिख सकते हैं। पुराने नियम की पहेली, निर्गमन अध्याय 34:6 और 7. आपको याद है, वहाँ क्या बताया गया है? "यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करूणामय और सत्य, हजारों पीढ़ियों तक निरन्तर करूणा करने वाला, अधर्म, अपराध और पाप का क्षमा करने वाला है। परन्तु, दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा।" वह धर्मी और क्षमा करने वाला है, क्रोधी और करूणामय है। वह यह दोनों कैसे हो सकता है? कहानी के इस भाग में हम इन दोनों भागों के प्रदर्शन को देखते हैं। उसके क्रोध और उसके न्याय के बारे में सोचें। उन सारी विपत्तियों के बारे में सोचें जिनके बारे में हम निर्गमन में पढ़ते हैं, जिसमें अन्तिम विपत्ति में मिस्र के सारे पहिलौठे मारे जाते हैं। फिर भी, फसह के द्वारा हम परमेश्वर की करूणा को देखते हैं। परमेश्वर अपने लोगों की पुकार को सुनता है और उन्हें मिस्र की गुलामी से बाहर निकालता है। वह उन्हें सीनै पर्वत पर लाता और वहाँ अपनी महिमा उन पर प्रकट करता है और उन्हें अपनी व्यवस्था, अपना वचन देता है और उन्हें वायदे देता है और दिन में बादल के खम्भे तथा रात में आग के खम्भे के द्वारा उनकी अगुवाई करता है।

अतः, हम परमेश्वर की करूणा को देखते हैं और शायद सर्वाधिक स्पष्टतम रूप में क्योंकि परमेश्वर वायदा करता है कि मैं तुम्हारे बीच में, तुम्हारे साथ वास करूँगा। निर्गमन की पुस्तक के बीच में मिलापवाला तम्बू है, जहाँ परमेश्वर बताता है कि किस प्रकार वह मिलापवाले तम्बू में किए जाने वाले बलिदानों के द्वारा अपनी पवित्रता में अपने लोगों के बीच में वास करेगा। और, क्या आपको याद है कि परमेश्वर लैव्यवस्था और गिनती की पुस्तकों में उन्हें आराधना के लिए नियम और व्यवस्थाएँ देता है? वे वायदे के देश की सीमा पर पहुँचते हैं परन्तु परमेश्वर पर भरोसा न करने के कारण परमेश्वर एक पीढ़ी के सारे लोगों के मरने तक प्रतीक्षा करता है और फिर यहोश की अगुवाई में उन्हें वायदे के देश में ले जाता है। और वे वायदे के देश पर अधिकार कर लेते हैं। वे उन सारे देशों को जीत लेते हैं।

इन सबका उद्देश्य क्या है? उद्देश्य उनके छुटकारे के द्वारा परमेश्वर की महिमा को सब लोगों पर प्रकट करना है। परमेश्वर अपने लोगों को मिस्र से छुड़ाकर वायदे के देश में लाया ताकि सारी जातियाँ जान ले कि वही यहोवा है। केवल उत्पत्ति से गिनती तक ही इस वाक्यांश का लगभग पचास बार प्रयोग किया गया है कि 'जिससे तुम या वे लोग जान लें कि मैं ही यहोवा हूँ।' परमेश्वर उन्हें वायदे के देश में लेकर आता है। वह उन्हें उन देशों के विदेशी ईश्वरों से छुटकारा पाने के लिए कहता है। मेरी महिमा को चारों ओर की जातियों में प्रतिबिम्बित करो।

यही परमेश्वर है। वह अपने लोगों को एक उद्देश्य के लिए अपने स्थान पर ला रहा है। और फिर भी 1 शमूएल 8 में पहुँचने पर आप देखते हैं कि परमेश्वर के लोग अपने राजा के रूप में परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करते हैं। और वे कहते हैं, "हम दूसरी जातियों की तरह एक मानवीय राजा को चाहते हैं।" अतः, परमेश्वर उन्हें वही देता है जो वे चाहते थे। यह बहुत भयानक है जब परमेश्वर पापी लोगों को वही देता है जो वे चाहते हैं। यह एकीकृत राजशाही की ओर लाता है जिसकी शुरूआत 1 शमूएल 9 से होती है और यह कहानी 1 इतिहास और 2 इतिहास के आरम्भ में अपने आप को दोहराती है जहाँ हम तीन सांसारिक राजाओं, शाऊल, दाऊद और सुलैमान के माध्यम से परमेश्वर की आशीष और न्याय के उदाहरण को देखते हैं।

आप उनके जीवनों को देखें और आप आशीष एवं न्याय दोनों को देखेंगे। परमेश्वर की आशीष का सर्वाधिक मानवीय स्वरूप संभवतः दाऊद के साथ की उसकी वाचा में देखा जा सकता है जहाँ वह दाऊद के वंश में से एक अनन्त राजा को खड़ा करने के बारे में वायदा करता है, जिसका सिंहासन सदा तक बना रहेगा। आप दाऊद और विशेषतः सुलैमान से उसके वायदों को देखें; वे स्थान से संबंधित हैं। परमेश्वर इन राजाओं को आशीष देने का वायदा देता है ताकि वे, विशेषतः, सुलैमान परमेश्वर के निवास के लिए एक स्थान को बना सके। मन्दिर, परमेश्वर की महिमा का वासस्थान।

अब, परमेश्वर के लोगों के वायदे के देश में स्थापित होने के बाद वह कहता है, "दाऊद, इस मन्दिर के निर्माण के लिए मैं सुलैमान का प्रयोग करूँगा।" सुलैमान को इस मन्दिर के निर्माण के लिए आशीष देता है; एक ऐसा स्थान जहाँ इस्राएली और सारी जातियों के लोग आकर परमेश्वर की महिमा को देखते हैं। और इस सारी प्रक्रिया में हम उसके उद्देश्य को प्रकट होते हुए देखते हैं। परमेश्वर के अभिषेक के द्वारा, राजशाही में इन राजाओं के अभिषेक के द्वारा परमेश्वर की महिमा

को सारी जातियों पर प्रकट करना। और फिर, यह मन्दिर, क्या 1 राजा अध्याय 8 आपको याद है? चाहें तो आप इसे लिख सकते हैं।

1 राजा 8:41–43, सुलैमान बताता है कि किस प्रकार विदेशी परमेश्वर के महान नाम और परमेश्वर के सामर्थी हाथ के बारे में सुनेंगे और सारी पृथ्वी के लोग उसके नाम को जान लेंगे और उसका भय मानेंगे। परन्तु, जब आप पढ़ते हैं तो हमें पता है कि क्या होता है। परमेश्वर के लोग विद्रोही थे, यहाँ तक कि ये राजा भी विद्रोही और पापी थे और वे परमेश्वर की आराधना को तुच्छ बना देते हैं। राजा और राज्य के नागरिक परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करते हैं और जो अन्ततः विभाजित राजशाही की ओर ले जाता है; एक प्रकार से, अराजकता की ओर ले जाता है।

यह उत्तरी और दक्षिणी राज्य है। प्रत्येक राज्य में अलग–अलग राजा और उनमें से अधिकाँश पूरी तरह से दुष्ट। तब, परमेश्वर क्या करता है? ऐसे समय में अपनी आशीष और अपने न्याय को प्रदर्शित करने के लिए परमेश्वर भविष्यद्वक्ताओं को खड़ा करता है, भविष्यद्वक्ता जो परमेश्वर के लोगों पर आने वाले न्याय की भविष्यद्वाणी करते हैं। वे परमेश्वर के लोगों पर आने वाली बंधुवाई के बारे में बताते हैं।

उत्तरी राज्य नष्ट हो जाएगा और दक्षिणी राज्य नष्ट हो जाएगा। यरूशलेम और मन्दिर नष्ट हो जाएँगे और परमेश्वर इन भविष्यद्वक्ताओं को न्याय और आशा के इस सन्देश को देने के लिए खड़ा करता है कि फिरकर परमेश्वर पर भरोसा करो, अपने पाप से मन फिराओ और परमेश्वर अपने कोप को शान्त करेगा। परन्तु लोग ध्यान नहीं देते और वे परमेश्वर तथा उत्तरी राज्य के राजा के विरूद्ध कठोर बने रहते हैं। क्या आपको याद है कि दक्षिणी राज्य नष्ट हो जाता है और अपने लोगों के बीच में परमेश्वर की उपस्थिति और उसकी महिमा के प्रतीक, यरूशलेम के मन्दिर को भी नष्ट कर दिया जाता है।

परन्तु, इसका मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर अपने लोगों को पूरी तरह से छोड़ देता है। यहेजकेल और अन्य भविष्यद्वक्ताओं में हम इस यथार्थ को देख चुके हैं कि निर्वासन में भी परमेश्वर अपने लोगों के बीच में था। और मन्दिर से बहुत दूर, वायदे के देश से बहुत दूर, निर्वासन में भी परमेश्वर उनके साथ है, उन्हें शक्ति दे रहा है, उनकी रखवाली कर रहा है, उन्हें पुनः स्थापित करने का वायदा कर रहा है। और अन्ततः, वह ऐसा ही करता है। निर्वासन के बाद वह उन्हें वापस

यरूशलेम में लेकर आता है। अपने लोगों की ताड़ना के द्वारा परमेश्वर अपनी महिमा को प्रकट कर रहा है।

यहेजकेल 36:22–23 में परमेश्वर कहता है, "मैं तुम्हें अपने महान नाम की पवित्रता दिखाऊँगा। वह नाम जिसे तुमने उन सब जातियों में अपवित्र कर दिया है, जिनके बीच में तुम रहे हो। मैं अपने महान नाम की पवित्रता दिखाऊँगा और जातियाँ जान लेंगी कि मैं यहोवा हूँ,' परमप्रधान यहोवा की यही वाणी है, 'जब मैं तुम्हारी आँखों के सामने अपने आप को पवित्र प्रकट करूँगा।'" परमेश्वर अपनी ताड़ना में, अपनी पवित्रता का प्रदर्शन कर रहा है और वायदा कर रहा है।

यशायाह अध्याय 60, "फिर एक दिन उसका उजियाला चमकेगा, उसकी महिमा उसके लोगों पर उदय होगी और जातियाँ उनकी ज्योति तथा राजा उसकी चमक की ओर आएँगे।" और इन सारे भविष्यद्वक्ताओं में आप अन्धकार, न्याय और क्रोध के बीच में भी आशा को देखते हैं। हमने आशा की उन किरणों को भी देखा क्योंकि ये सारे भविष्यद्वक्ता एक आने वाले राजा की ओर संकेत करते थे। यशायाह कहता है, एक बालक का जन्म होगा, एक पुत्र दिया जाएगा और उसका नाम अद्भुत युक्ति करने वाला, सामर्थी परमेश्वर, अनन्त पिता और शान्ति का राजकुमार होगा।

पुराने नियम की अन्तिम पुस्तक मलाकी कहती है, "जिस यहोवा को तुम खोजते हो वह अचानक ही आ जाएगा।" और उस बिन्दू पर चार सौ वर्षों के खामोशी के समय के बाद परमेश्वर द्वारा स्वयं को यीशु के रूप में महिमामय रूप में प्रकट किए जाने का आधार तैयार किया जाता है। देहधारी परमेश्वर और अब परमेश्वर की आशीष और उसका न्याय यीशु मसीह के द्वारा प्रकट होता है। वह सर्वोच्च भविष्यद्वक्ता है। वह सिद्ध याजक है। वही प्रतिज्ञा किया हुआ राजा है।

परमेश्वर के लिए सब कुछ इस पर केन्द्रित है कि वह केवल अपने लोगों के साथ ही नहीं, परन्तु उनके बीच में रहे; देहधारण। यही खूबसूरती है। जब यूहन्ना 1 कहता है, "वचन देहधारी हुआ।" वह कहता है, "वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में वास किया।" वास करने का शाब्दिक अर्थ है डेरा किया। जिस प्रकार मिलापवाले तम्बू, मन्दिर और यहाँ तक कि बंधुवाई में भी परमेश्वर की उपस्थिति स्पष्ट थी, उसी प्रकार अब उसकी उपस्थिति उसके पुत्र के व्यक्तित्व में स्पष्ट थी। देहधारी परमेश्वर।

यूहन्ना 2 में मूलतः यीशु कहते हैं,"मन्दिर मैं हूँ। मैं ही वह स्थान हूँ जहाँ तुम परमेश्वर से मिलते हो।" एक स्थान, परमेश्वर अपने लोगों के बीच में, देहधारण; इन सबका उद्देश्य? ताकि परमेश्वर की महिमा उसके उद्धार के द्वारा सब लोगों में बनी रहे। देहधारी परमेश्वर, यीशु आते हैं और ऐसा जीवन बिताते हैं जो हम में से कोई नहीं बिता सकता था और वह ऐसी मौत मरते हैं जिसके हम सब लायक थे। वही मार्ग, सत्य और जीवन है और यीशु से अलग कोई भी पिता के पास नहीं आ सकता है। और जितने उसे ग्रहण करते हैं, जितने उसके नाम पर विश्वास करते हैं, उन्हें उसने परमेश्वर की सन्तान बनने का अधिकार दिया है। परमेश्वर के उद्देश्य के लिए परमेश्वर के लोग और परमेश्वर का स्थान; सबकी पूर्ति मसीह में होती है।

इसीलिए सुसमाचार घोषणा करते हैं, "स्वर्ग का राज्य निकट है।" फिर भी आप उन सुसमाचारों के अन्त में और प्रेरितों के काम के आरम्भ में यीशु को जाते हुए देखते हैं। वह कब्र में से जी उठता है और फिर पुनरूत्थान के बाद स्वर्ग में चला जाता है और वह अपने आत्मा को अपने लोगों पर भेजता है। प्रेरितों के काम से लेकर यहूदा तक परमेश्वर की आशीष और परमेश्वर का न्याय उसकी कलीसिया के द्वारा दिखाया जाता है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक के आरम्भ से लेकर शेष नये नियम में, मसीह सबका न्यायी है और प्रत्येक व्यक्ति का अनन्तकाल उसके प्रति उनके प्रत्युत्तर पर निर्भर है। क्योंकि वह प्रत्येक व्यक्ति उद्धार पाएगा जो यह अंगीकार करता है कि यीशु ही प्रभु और अपने मन में विश्वास करता है कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया है। और वह, मसीह हमारा भविष्यद्वक्ता है और हम उसके वक्ता हैं। प्रेरितों के काम 1 कहता है, "मैं अपना आत्मा तुम पर उण्डेलूँगा और तुम पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह बनोगे।" वह हमारा महायाजक है। हमें याजकों का एक राज्य बनाया गया है।

नया नियम परमेश्वर तक पहुँच के बारे में बात करता है; आप और मैं मसीह के माध्यम से परमेश्वर की उपस्थिति में आ सकते हैं। वह हमारा राजा है। हम उसके वारिस हैं; परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस; कलीसिया और परमेश्वर की आशीष को पाने वाले लोग हैं। और मसीह को अस्वीकार करने वाला प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के न्याय का भागी है। परमेश्वर के लोग और परमेश्वर का स्थान, यह नये नियम का आश्चर्यजनक यथार्थ है। यहाँ परमेश्वर किसी मिलापवाले तम्बू, मन्दिर या बंधुवाई में अपने लोगों के साथ नहीं है।

देहधारण में परमेश्वर भी अपने लोगों के बीच में है, अब परमेश्वर अपने लोगों में, हमारी देहों में है। हमारी देह मन्दिर है। हम पवित्र आत्मा का मन्दिर हैं। हम परमेश्वर का वास स्थान हैं। वह आता है और हमारे अन्दर, हमारे साथ, हमारे बीच में वास करता है। और हम जातियों से आकर मन्दिर में परमेश्वर की महिमा को देखने की अपेक्षा नहीं रखते हैं। नहीं, हम मन्दिर हैं और हम परमेश्वर की महिमा की घोषणा करते हुए जातियों में जाते हैं।

कलीसिया का उद्देश्य यही है, सब लोगों में परमेश्वर की महिमा। यीशु कहते हैं, "जाओ और सारी जातियों को चेला बनाओ, उन्हें बपतिस्मा दो और उन्हें वे सारी बातें मानना सिखाओ जिसकी मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है और देखो मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूँ।" राज्य की महिमा करो, राज्य को फैलाओ, राज्य की खातिर अपने जीवनों को बलिदान कर दो। यह कलीसिया की तस्वीर है। हम एक राज्य का प्रसार कर रहे हैं। क्या आप इसे देख रहे हैं?

हम एक लम्बी पंक्ति में हैं। एक पंक्ति जिसकी शुरूआत सृष्टि में परमेश्वर और उसके उद्देश्य के लिए एक स्थान पर उसके लोगों के साथ सारी जातियों में उसकी महिमा के प्रसार और उसके राज्य के विस्तार के उद्देश्य के साथ हुई। हमें इसी के लिए रचा गया था। हमें इस संसार की वस्तुओं और भाग–दौड़ से कहीं अधिक के लिए रचा गया है। हमें परमेश्वर के लोग होने के लिए रचा गया है जहाँ वह अपनी महिमा के साथ रहता है और उसका आत्मा हमारे अन्दर रहते हुए परमेश्वर के राज्य को सब लोगों में फैलाता है।

हम अपना जीवन इस राज्य के विस्तार के लिए व्यतीत करते हैं। अपने आप को इस कहानी के बीच में देखें। याद रखें कि जिसकी शुरूआत अब्राहम और मूसा और यहोशू और एलिय्याह और यशायाह और यिर्मयाह और यहेजकेल और पतरस और यूहन्ना और पौलुस के साथ हुई थी उसमें अब हम सब और वे लोग भी शामिल हैं जिन्हें परमेश्वर के अनुग्रह से हमें मसीह में लाने का सौभाग्य प्राप्त होगा। हम एक भव्य और विशाल बात के हिस्से हैं और यह सब किस ओर बढ़ रहा है? हमें किस बात की प्रतीक्षा करनी है?

और यहीं पर हम अन्ततः प्रकाशितवाक्य पर पहुँचते हैं। हमें इसी की प्रतीक्षा करनी है। प्रकाशितवाक्य 21:1,

फिर मैं ने नए आकाश और नई पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। फिर मैं ने पवित्र नगर नए यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हन के समान थी, जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो। फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा। और वह उन की आंखों से सब आँसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।

और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूँ: फिर उस ने कहा, कि लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं। फिर उस ने मुझ से कहा, ये बातें पूरी हो गई हैं, मैं अलफा और ओमेगा, आदि और अन्त हूँ: मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊँगा। जो जय पाए, वही उन वस्तुओं का वारिस होगा; और मैं उसका परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा। पर डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों, और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती हैः यह दूसरी मृत्यु है।

यहाँ राज्य, परमेश्वर के लोगों के बारे में सोचें। यह परमेश्वर की अन्तिम आशीष और न्याय है। उन सब लोगों के लिए यह तस्वीर असीम आनन्द की तस्वीर है जिन्होंने राजा का सम्मान किया है। क्या आपने कभी पद 6 सुना है? "मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊँगा।" आनन्द जो पूर्ण है और आनन्द जो मुफ्त है।

भजन 16:11 इसे बताता है,"तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है और तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है।" और प्रकाशितवाक्य 21 में इसका अनुभव करेंगे। इसीलिए हम इस संसार के सुखों और लालसाओं को त्याग देते हैं। क्या आप इसे देख रहे हैं? इसी कारण यहाँ अधिक वस्तुओं को

एकत्रित करने का कोई मतलब नहीं है। इसी कारण इस प्रकार से जीने का कोई मतलब नहीं है कि यही सब कुछ है। आइए हम इसका सर्वाधिक उपयोग करें। यही सब कुछ नहीं है।
हम उस दिन की प्रतीक्षा में हैं जब हम उस आनन्द, सन्तुष्टि और खुशी को देखेंगे जिनकी तुलना इस संसार में किसी भी वस्तु से नहीं की जा सकती है। हम इस संसार के सुखों के लिए नहीं जीते हैं? हम एक दूसरे नगर, एक दूसरे स्थान के लिए जी रहे हैं जो आने वाला है। इसलिए अपनी आँखें उठाइए, अपनी आँखें इस संसार की वस्तुओं और लालसाओं से ऊपर उठाइए और देखिए कि जो आ रहा है उससे बेहतर कुछ भी नहीं है। असीम आनन्द, स्वर्ग इस अनन्त आशीष को बताता है।

हम एक राज्य के निवासी और एक राजा के वारिस होंगे। जिन लोगों ने राजा को अस्वीकार किया है, उन सबके लिए असीम आनन्द की बजाय अपरिवर्तनीय न्याय होगा। हम प्रकाशितवाक्य 20 पद 11 में इसे देखते हैं:

> फिर मैं ने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उस को जो उस पर बैठा हुआ है, देखा, जिस के सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उन के लिए जगह न मिली। फिर मैं ने छोटे–बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गई; और फिर एक और पुस्तक खोली गई; अर्थात् जीवन की पुस्तक; और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उन के कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया। और समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उस में थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उन में थे दे दिया; और उन में से हर एक के कामों के अनुसार उन का न्याय किया गया। और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए; यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है। और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।

नरक परमेश्वर के अनन्त न्याय को दिखाता है। और एक दिन आ रहा है जब हर एक व्यक्ति अपने पाप में सृष्टिकर्ता परमेश्वर के सामने खड़ा होगा और परमेश्वर धर्मी होगा। उस दिन हम में से कोई भी अपनी योग्यताओं के आधार पर खड़ा होना नहीं चाहेगा। हमारी योग्यताएँ अनन्त दण्ड

की ओर ले जाएँगी। सुसमाचार का महान समाचार यह है कि हम किसी दूसरे की योग्यताओं के आधार पर खड़े हो सकते हैं।

मसीह जिसने आकर आपके पापों का मूल्य चुकाया है, जब आप उस पर भरोसा रखते हैं तो बाइबल कहती है, "उसने आपको धार्मिकता का वस्त्र पहनाया है ताकि उस दिन आपका नाम जीवन की पुस्तक में हो। हाँ, उसने अपने आप को नम्र किया, अपने घमण्ड और विद्रोह से मुड़ा और मसीह पर भरोसा किया।" मुड़ें और आज उसके उद्धार को अनुभव करें। जिस किसी पुरूष, स्त्री और बच्चे ने कभी मसीह पर भरोसा नहीं किया है; आप अपने उद्धार के लिए आज उस पर भरोसा करें। क्रूस पर उसकी मृत्यु, कब्र में से पुनरूत्थान पर भरोसा करें और अपने जीवन को उसके हाथों में दें। उसके गुणों पर खड़े हों न कि अपने। अपने मुँह से अंगीकार करें कि वह प्रभु है। अपने मन में विश्वास करें कि परमेश्वर उसे मृतकों में से जिला उठाया। आप का उद्धार हो जाएगा।

असीम आनन्द या अपरिवर्तनीय न्याय। अब, यह एक स्थान है। यह अनन्त संगति का स्थान है। अब, हम स्वर्ग में असीम आनन्द की तस्वीर के साथ आगे बढ़ेंगे। भाइयो और बहनो इसे देखें, हम उसके साथ होंगे। देखें पद 3 कहता है, "परमेश्वर का निवास मनुष्यों के साथ है। वह उनके साथ वास करेगा। वे उसके लोग होंगे।" परमेश्वर स्वयं उनके परमेश्वर के रूप में उनके साथ होगा। यही स्वर्ग की सर्वोच्च खुशी है।
यहाँ सावधान रहें। जब आप स्वर्ग के बारे में सोचते हैं तो भवनों के बारे में सोचने के संबंध में सावधान रहें। भवनों के बारे में न सोचें। जब आप स्वर्ग में बारे में सोचते हैं तो यह यूहन्ना अध्याय 14 की पूर्ण गलतफहमी है। यीशु ने कहा, "मेरे घर में बहुत से कमरे हैं।" कुछ अनुवादों में भवन कहा गया है। परन्तु, उस शब्द का शाब्दिक अर्थ वास स्थान है।

प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 में इसी शब्द का प्रयोग किया गया है जो बताता है कि किस प्रकार परमेश्वर मनुष्य के साथ रहता है। यह स्वर्ग की सर्वोच्च खुशी है कि परमेश्वर का वास मनुष्यों के साथ होगा। हमारे अन्दर भौतिकता की इतनी अधिक प्रवृत्ति है कि हम स्वर्ग के बारे में इन अर्थों में सोचते हैं। हम सोचते हैं, हम बोलते हैं, मजाक में भी ऐसा न कहें। स्वर्ग में गोल्फ और फुटबॉल और इस संसार की वे सारी बातें हैं जो हमें पसन्द हैं। नहीं, यह पूरे बिन्दू से चूक जाता है।

मैं सेवकाई करते समय यात्रा और प्रचार के दौरान विभिन्न प्रकार के स्थानों पर रहा हूँ, जिनमें कुछ इतने अच्छे नहीं थे और कुछ बहुत अच्छे थे। मुझे उनमें से एक घर के बारे में याद है। उसमें पास में ही लोग रहते थे और वह घर बहुत ही बड़ा था। मैं उस घर में पहुँचता हूँ और मुझे मेरे कमरे में पहुँचाया जाता है। बहुत ही अच्छा संगमरमर का स्नानघर था और बाहर निकलते ही बहुत बड़ी जगह और गायें, घोड़े और अस्तबल थे। मेरा मतलब है कि वे अस्तबल ऐसे किसी भी घर से अच्छे थे जिनमें उस समय मैं रहने की कल्पना कर सकता था। और उस रात हम एक बड़ी सी मेज पर भोजन करने के लिए बैठे और हमारे लिए बहुत ही अच्छा भोजन तैयार किया गया और हमने उसका आनन्द लिया। और मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं जब भी ऐसे स्थानों पर जाता था तब मेरी पत्नी हेदर मेरे साथ नहीं होती थी। इसलिए, मैं से फोन करता और बताता कि वह किस बात से चूक गई है। और वह दूसरे प्रकार के स्थानों में मेरे साथ होती थी। और एक बार मुझे याद है एक स्थान पर मुझे बताया गया कि आप हमारे तहखाने में रहेंगे। मैं ने सोचा कि तहखाने में रहना बहुत ही मजेदार होगा। परन्तु, जब मैं तहखाने में पहुँचा तो मैं ने देखा कि तहखाना भी ऐसे किसी भी घर से अच्छा था जिसमें मैं रहा था। और तहखाने के बारे में सबसे अच्छी बात यह थी कि एक विशालकाय टीवी के सामने गर्म पानी का एक विशाल टब था। और यह भी फुटबॉल के मौसम में था और मैं ने सोचा, "हेदर तुम इससे भी चूक गई।"

हम कई बार ऐसा ही सोचते हैं। हम इस प्रकार के स्थानों के बारे में सोचते हैं, हम स्वर्ग के बारे में सोचते हैं और सोचते हैं कि वहाँ पर संसार की सबसे अच्छी वस्तुएँ उपलब्ध होंगी। स्वर्ग एक ऐसा स्थान है जहाँ संसार की सबसे अच्छी वस्तुएँ भी इस तथ्य की तुलना में कुछ नहीं हैं कि हम परमेश्वर के साथ वास करते हैं। और वह हमारी कल्पना के अनुसार सारी वस्तुओं के योग से भी कहीं अधिक सर्वोच्च रूप से महान है।

स्वर्ग की खूबसूरती परमेश्वर की उपस्थिति है। हम उसी की लालसा रखते हैं। यही हम चाहते हैं क्योंकि जब हम उसकी उपस्थिति में होते हैं तो मृत्यु जीवन में बदल जाती है। क्या आप देख रहे हैं कि वह प्रकाशितवाक्य 21 में क्या कह रहा है? वह कहता है, "फिर पाप नहीं होगा। फिर कोई दुःख नहीं होगा।" क्या आप पद 4 को देख रहे हैं? परमेश्वर का व्यक्तिगत चित्रण किया गया है। वह व्यक्तिगत रूप से हमारी आँखों से आँसुओं को पोंछ रहा है।

कोई पाप नहीं होगा, कोई दुख नहीं होगा, कोई बीमारी नहीं होगी, कोई भुखमरी या भूख नहीं होगी, कोई दर्द या वेदना नहीं होगी, एड्स नहीं होगा, कोई अलगाव नहीं होगा और न ही कोई दर्द क्योंकि मृत्यु जीवन में बदल जाएगी। और रात ज्योति में बदल जाएगी। पद 22 को सुनें, "मैं ने नगर में कोई मन्दिर नहीं देखा क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेमना उसका मन्दिर हैं।" यह रूचिकर है। हमारे पास इसकी गहराई में जाने का समय नहीं है लेकिन जब आप इसे देखते हैं तो उसका आकार घन के समान है। इसका आकार अति पवित्रस्थान को प्रतिबिम्बित करता है और वहाँ कोई मन्दिर नहीं है क्योंकि इस प्रकार है जैसे कि हम परमेश्वर की उपस्थिति में अति पवित्रस्थान में वास कर रहे हैं।

और आगे पद 23 में आप देखते हैं कि "उस नगर को सूर्य या चन्द्रमा की रोशनी की आवश्यकता नहीं है क्योंकि परमेश्वर की महिमा इसे रोशनी देती है और मेमना इसका दीपक है। इसकी ज्योति में जातियाँ चलेंगी और राजा पृथ्वी के राजा अपनी महिमा इसमें लाएँगे और उसके फाटक दिन में कभी बन्द नहीं होंगे और वहाँ कभी रात नहीं होगी।" अगले ही अध्याय में, अध्याय 22 पद 5 में जब आप आते हैं, तो लिखा है, "फिर रात नहीं होगी। उन्हें दीपक या सूर्य की आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि यहोवा परमेश्वर उनकी ज्योति होगा और वे सदा सर्वदा के लिए राज्य करेंगे।" मृत्यु जीवन में बदल गई। रात रोशनी में बदल गई। भ्रष्टता का स्थान शुद्धता ले लेगी।

अध्याय 21 पद 27 में, "और उस में कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करने वाला, या झूठ का गढ़ने वाला, किसी रीति से प्रवेश न करेगा; पर केवल वे लोग जिन के नाम मेमने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।" और फिर इसे देखें। स्राप आशीष में बदल जाएगा। क्या आपको उत्पत्ति 3:24 में जीवन के वृक्ष का पहरा देने वाली ज्वालामय तलवार के बारे में याद है जो मनुष्य को जीवन के वृक्ष से दूर रखती है? वह बाइबल की शुरूआत थी, उत्पत्ति तीसरा अध्याय।

अब आप बाइबल के अन्तिम अध्याय पर आते हैं, और लिखा है, "फिर उस ने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेमने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचों–बीच बहती थी। और नदी के इस पार; और उस पार, जीवन का पेड़ थाः उस में बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस पेड़ के पत्तों से जाति–जाति के लोग चंगे होते थे। और फिर स्राप न होगा और परमेश्वर और मेमने का सिंहासन उस नगर में होगा, और उसके दास उस की सेवा करेंगे।"

स्राप पूरी तरह से आशीष में बदल जाता है और यह सब हमें बाइबल के सबसे सुन्दर वचनों की ओर लाता है। और मैं जानता हूँ कि यह एक साहसी कथन है परन्तु प्रकाशितवाक्य 22:4 को देखें। "वे उसका मुँह देखेंगे।" हमारी आशा यही है और यही हमारी लालसा है। यह सम्पूर्ण पुस्तक इसी की ओर संकेत करती है। उस दिन की ओर जब आप और मैं उसके चेहरे और उसकी महिमा को देखेंगे। हम उसके साथ रहेंगे और हम उसके चेहरे को देखेंगे। यही छुटकारे का लक्ष्य है।

हम में से कोई भी अपने पाप में उसके मुँह को नहीं देख सकता है। उस दिन पाप नहीं रहेगा। और हम उसकी सम्पूर्ण सुन्दरता, उसकी सम्पूर्ण महिमा और उसके सम्पूर्ण प्रताप में उसे देखेंगे। आप प्रख्यात गीतकार फैनी क्रोस्बी को जानते होंगे। वह अन्धी थी और उसने एक कविता लिखी, "मेरा मुक्तिदाता, सबसे प्रथम।" मैं चाहता हूँ आप इसके एक भाग को सुनें। याद रखें, वह अन्धी थी और इसका मतलब है कि इसके बारे में सोचें। इसका मतलब है कि वह अपनी आँखों से सबसे पहले अपने उद्धारकर्ता को देखेगी।

उसने लिखा, "जब मेरे जीवन का कार्य समाप्त हो जाता है और मैं उठती हुई लहर को पार करती हूँ, तब मैं चमकीली और तेजोमय सुबह को देखूँगी। मैं अपने मुक्तिदाता को जानूँगी और दूसरे पार पहुँचने पर सबसे पहले उसकी मुस्कुराहट मेरा स्वागत करेगी। बेदाग श्वेत वस्त्र में नगर में फाटक में से होते हुए वह मुझे उस स्थान पर ले जाएगा जहाँ कभी आँसू नहीं गिरेंगे और मैं युगों के हर्षपूर्ण गीत में खो जाऊँगी; लेकिन सबसे पहले मैं अपने मुक्तिदाता को देखना चाहती हूँ।"

क्या इस अर्थ में हम सब एक समान नहीं हैं? पृथ्वी पर हम हमारे पाप के कारण अन्धे हैं और जब हम उसके चेहरे को देखते हैं तो सब कुछ बदल जाता है। इन सबका उद्देश्य केवल यही है, परमेश्वर की महिमा का सब लोगों द्वारा आनन्द लिया जाना। यह राज्य की पूर्णता है। प्रकाशितवाक्य में हम देखते हैं कि हर एक जाति और भाषा और गोत्र और लोगों की एक बड़ी भीड़ एक नया गीत गा रही है।

प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 सिंहासन के केन्द्र में सिंह समान मेमने, यीशु को चित्रित करता है। और लिखा है कि वे एक नया गीत गाते हैं, "तू इस पुस्तक को लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तू ने वध होकर अपने लहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से

परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है। और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।" असंख्य लोगों की एक बड़ी भीड़ के साथ मिलकर हम हमारे राजा की योग्यता की घोषणा करेंगे और हम उसका आनन्द लेंगे। हम उसके साथ सदा–सर्वदा के लिए आनन्दित रहेंगे। हम इसी की प्रतीक्षा में हैं।

प्रकाशितवाक्य में यीशु के दावों को सुनें। वह तीन बार कहता है। प्रकाशितवाक्य 22:7, इसे रेखांकित करें। वह कहता है, "देख, में शीघ्र आने वाला हूँ।" पद 7 और नीचे पद 12, "देख, मैं शीघ्र आ रहा हूँ।" पद 7, पद 12 और फिर पद 20. "जो इन बातों की गवाही देता है वह कहता है, 'मैं शीघ्र आ रहा हूँ।'" यह मसीह का दावा है। वह शीघ्र आ रहा है और इसलिए कलीसिया पुकारकर कहती है, "आमीन। प्रभु यीशु आ।" शीघ्र आ। बाइबल इसी प्रकार समाप्त होती है। छुटकारा पाए हुए लोगों की आने वाले राजा की लालसा के साथ बाइबल समाप्त होती है।

ऐसा प्रतीत होता है कि आरम्भ से अन्त तक यह सम्पूर्ण पुस्तक उस कहानी का एक शीर्षक पृष्ठ है कि जिन लोगों ने मसीह पर विश्वास किया है उनके लिए यह कहानी की केवल एक शुरूआत है और यह सदा तक स्थिर रहेगी। प्रकाशितवाक्य 11:15 कहता है, "जगत का राज्य हमारे प्रभु का, और उसके मसीह का हो गया। और वह युगानुयुग राज्य करेगा।" परमेश्वर के उद्देश्य के लिए परमेश्वर के लोग परमेश्वर के स्थान में।